

वसुदेवसुतं(न) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम् ॥



॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु
अनुस्वार, विसर्ग व आघात प्रयोग सहित चरणानुसार विभाग, मूल संहितापाठ के अनुकूल

सरल पठनीय गीता ~ द्वादश (12वाँ) अध्याय

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं(म्) सततयुक्ता ये, भक्तास्त्वां(म्) पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं(न), तेषां(ङ्) के योगवित्तमाः ॥1॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां(न), नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेताः(स), ते मे युक्ततमा मताः ॥2॥
ये त्वक्षरमनिर्देश्यम्, अव्यक्तं(म्) पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं(ञ्) च, कूटस्थमचलं(न) ध्रुवम् ॥3॥

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं(म्), सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव, सर्वभूतहिते रताः ॥4॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम्, अव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं(न), देहवद्भिरवाप्यते ॥5॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि, मयि सन्न्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन, मां(न्) ध्यायन्त उपासते॥6

तेषामहं(म्) समुद्धर्ता, मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ, मय्यावेशितचेतसाम्॥7॥

मय्येव मन आधत्स्व, मयि बुद्धिं(न्) निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव, अत ऊर्ध्वं(न्) न संशयः॥8॥
अथ चित्तं(म्) समाधातुं(न्), न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो, मामिच्छाप्तुं(न्) धनञ्जय॥9॥

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि, मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि, कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥10॥

अथैतदप्यशक्तोऽसि, कर्तुं(म्) मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं(न्), ततः(ख) कुरु यतात्मवान्॥11॥

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्, ज्ञानाद्भयानं(वँ) विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागः (स्), त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥12॥

अद्वेष्टा सर्वभूतानां(म्), मैत्रः(ख) करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः(स्), समदुःखसुखः क्षमी॥13॥

सन्तुष्टः(स्) सततं(यँ) योगी, यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिः(र्), यो मद्भक्तः(स्) स मे प्रियः॥14॥

यस्मान्नोद्विजते लोको, लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः(र्), मुक्तो यः(स्) स च मे प्रियः॥15॥

अनपेक्षः(श्) शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्तः(स्) स मे प्रियः॥16॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान्यः(स्) स मे प्रियः॥17॥

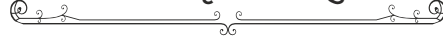
समः(श्) शत्रौ च मित्रे च, तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः(स्) सङ्गविवर्जितः॥18॥

तुल्यनिन्दास्तुतिमौनी, सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः(स्) स्थिरमतिः(र्), भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥19॥

ये तु धर्म्यामृतमिदं(यँ), यथोक्तं(म्) पर्युपासते।
श्रद्धधाना मत्परमा, भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥20॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां (यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः॥

॥ ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥



- विसर्ग के उच्चार जहाँ (ख) अथवा (फ) लिखे गये हैं, वह प्रत्यक्ष ख अथवा फ नहीं होते, उनका उच्चारण 'ख' या 'फ' के जैसा किया जाता है।
- संयुक्त वर्ण (दो व्यंजन वर्णों के संयोग) से पहले वाले अक्षर पर आघात (हल्का सा जोर) देकर पढ़ना चाहिये। '||' का चिह्न आघात को दर्शाने हेतु दिया गया है।
- कुछ स्थानों पर स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी अपवाद नियम के कारण आघात नहीं दिये गये हैं जैसे एक ही वर्ण के दो बार आने से, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने से, रफार (उपर र) या हकार आने पर आदि। जिन स्थानों पर आघात का चिह्न नहीं वहाँ बिना आघात के ही अभ्यास करें।



योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) ब्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥


LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

Learngeeta.com

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।